19 दुरूदो सलाम

19 Duroodo Salaam (Hindi)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(19 दुरूदो सलाम)

येह रिसाला **(19 दुरूदो सलाम)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

19 दुरूदो सलाम

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है कि जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर **दस रह़मतें** नाज़िल फ़रमाएगा ।

(صَحِیح مُسلِم، ص٢١٦، حدیث:٤٠٨)

"بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से 19 दुरूदो सलाम

शबे जुमुआ़ का दुरूद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا
مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ
الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

www.dawateislami.net

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़् कम एक मर्तबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات، ص ١٥١ ملخصًا)

तमाम गुनाह मुआ़फ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े, अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।

(المرجع السابق، ص ٦٥)

www.dawateislami.net

रह़मत के सत्तर[70] दरवाज़े

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع، ص۲۷۷)

एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَّا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस के पढ़ने वाले के लिये सत्तर[70] फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد، ج۱۰، ص۲۵٤، حدیث:۱۷۳۰۵)

छ[6] लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِىْ عِلْمِ اللّٰهِ

www.dawateislami.net

صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छ[6] लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات، ص ١٤٩)

कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع، ص ١٢٥)

www.dawateislami.net

सब से अफ़्ज़ल दुरूदे पाक

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ
عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ
وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرٰهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी लैला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मुझे का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मिले कहने लगे : क्या तुम्हें वोह तोह़फ़ा न दूं जो मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है ! मैं ने कहा : क्यूं नहीं पेश कीजिये, आप ने फ़रमाया कि हम ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेशक **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ ने हमें (आप पर) सलाम भेजना सिखा दिया लेकिन हम आप पर और अहले बैत पर दुरूद कैसे भेजें तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : यूं कहो !

(صحیح البخاری ،ج۲،ص۴۲۹،حدیث ۳۳۷۰)

आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सब दुरूदों से अफ़्ज़ल दुरूद वोह है जो सब आ'माल से अफ़्ज़ल (अ़मल) या'नी नमाज़ में मुक़र्रर किया गया है (या'नी दुरूदे इब्राहीमी)।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 6, स. 183)

बख़्शिश व मग़्फ़िरत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ

www.dawateislami.net

किसी शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي को वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा और ह़ाल दरयाफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दुरूदे पाक की ब-र-कत से मेरी बख़्शिश फ़रमा दी। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السّادات، ص ٨١ ملخصًا)

माल में ख़ैरो ब-र-कत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

साह़िबे रूहुल बयान फ़रमाते हैं : जो शख़्स इस दुरूदे पाक को पढ़ेगा उस का मालो दौलत बढ़ता रहेगा। (تَفْسِيْر رُوْحُ الْبَيَان، الاحزاب تحت الآية:٥٦، ج٧، ص٢٣٣)

क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत़ हो

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ

www.dawateislami.net

اَلْكَامِلِ وَعَلٰى اٰلِهٖ كَمَا لَانِهَايَةَ لِكَمَالِكَ وَعَدَدَ كَمَالِهٖ

अगर किसी शख़्स को निस्यान या'नी भूल जाने की बीमारी हो तो वोह मग़रिब और इ़शा के दरमियान इस दुरूदे पाक को कसरत से पढ़े, اِن شاءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हाफ़िज़ा क़वी हो जाएगा। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات، ص ۱۹۱، ۱۹۲ ملتقطاً)

दीन व दुन्या की ने'मतें ह़ासिल कीजिये

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ اِنْعَامِ اللّٰهِ وَاِفْضَالِهٖ

इस दुरूदे पाक को पढ़ने से दीन व दुन्या की बे शुमार ने'मतें ह़ासिल होंगी।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات، ص ۱۵۱)

दुरूदे शफ़ाअ़त

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ

www.dawateislami.net

عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है।

(اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْهِيب، ج۲ ص۳۲۹، حديث:۳۱)

आबे कौसर से भरा पियाला

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَوْلَادِهٖ
وَاَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيّٰتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ وَاَصْهَارِهٖ وَاَنْصَارِهٖ
وَاَشْيَاعِهٖ وَمُحِبِّيْهِ وَاُمَّتِهٖ وَعَلَيْنَا مَعَهُمْ اَجْمَعِيْنَ
يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ قَوِی फ़रमाते हैं कि जो शख़्स ह़ौज़े कौसर से भरा पियाला पीना चाहे वोह इस दुरूदे पाक को पढ़े। (الشفاء الجزء الثانی، ص۵۷)

www.dawateislami.net

ग्यारह हज़ार दुरूद का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ صَلٰوۃً اَنْتَ لَھَا اَھْلٌ وَّھُوَ لَھَا اَھْلٌ

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक का एक मर्तबा पढ़ना ग्हयारह हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बराबर है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات،ص۱۵۳)

हर क़िस्म के फ़ितने से नजात के लिये

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ قَدْ ضَاقَتْ حِیْلَتِیْ اَدْرِکْنِیْ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ

www.dawateislami.net

सय्यिद इब्ने आ़बिदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं कि मैं ने इसे एक फ़ित्नए अ़ज़ीम में पढ़ा जो दिमश्क़ में वाके़अ़ हुवा, इसे अभी दो सो मर्तबा भी नहीं पढ़ा था कि मुझे एक शख़्स ने आ कर इत्तिलाअ़ दी कि फ़ितना ख़त्म हो गया। (اَفْضَلُ الصَّلٰوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات،ص۱۵٤)

एक लाख दुरूदे पाक का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النُّوْرِ الذَّاتِيِّ وَالسِّرِّ السَّارِيْ فِيْ سَآئِرِ الْاَسْمَآءِ وَالصِّفَاتِ

इस दुरूदे पाक को एक बार पढ़ा जाए तो एक लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब मिलता है नीज़ अगर किसी को कोई ह़ाजत दरपेश हो तो येह दुरूदे पाक पांच सो बार पढ़े اِنْ شَاءَ اللّٰهعَزَّوَجَلَّ ह़ाजत पूरी होगी।

(اَفْضَلُ الصَّلٰوات عَلٰی سَیِّدِ السّادات،ص۱۱۳)

www.dawateislami.net

दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़-रूई

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَ سَلِّمْ بِعَدَدِ
مَا فِىْ جَمِيْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا

क़ुरआने करीम की तिलावत के बा'द जो शख़्स इस दुरूदे पाक को पढ़ेगा वोह दुन्या व आख़िरत में सुर्ख़-रू रहेगा।

(تَفْسِيرُ رُوحُ الْبَيَان، الاحزاب تحت الآية:٥٦،ج٧،ص٢٣٤)

चौदह हज़ार दुरूदे पाक का सवाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِهٖ عَدَدَ كَمَالِ اللّٰهِ وَكَمَا يَلِيْقُ بِكَمَالِهٖ

इस दुरूद शरीफ़ को सिर्फ़ एक मर्तबा पढ़ने से चौदह हज़ार दुरूदे पाक का सवाब मिलता है।

(اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السّادات،ص١٥٠)

www.dawateislami.net

दुरूदे तुनज्जीना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَاةً تُنَجِّيْنَا بِهَا مِنْ
جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْاٰفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ
الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا
بِهَا اَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصَى الْغَايَاتِ
مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيَاةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ
اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

शैख़ मज्दुद्दीन फ़ीरोज़आबादी साहिबे क़ामूस ने शैख़ ह़सन बिन अ़ली अस्वानी के ह़वाले से बयान किया कि जो शख़्स येह दुरूदे पाक (**दुरूदे तुनज्जीना**) किसी भी मुश्किल, आफ़त या मुसीबत में एक हज़ार मर्तबा पढ़े **अल्लाह** तआ़ला उस मुश्किल को आसान फ़रमा देगा और उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा। (مَطَالِعُ الْمُسَرَّات،ص ٤٧١)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो'बए तख़्रीज)
16 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1433 हि./11.01.2012

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	दुरूदे शफ़ाअ़त	8
शबे जुमुआ़ का दुरूद	1	आबे कौसर से भरा पियाला	9
तमाम गुनाह मुआ़फ़	2	ग्यारह हज़ार दुरूद का सवाब	10
रह़मत के सत्तर[70] दरवाज़े	3	हर क़िस्म के फ़ितने से नजात के लिये	10
एक हज़ार दिन की नेकियां	3		
छ[6] लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब	3	एक लाख दुरूदे पाक का सवाब	11
क़ुर्बे मुस्त़फ़ा	4	दुन्या व आख़िरत की सुर्ख़-रूई	12
सब से अफ़्ज़ल दुरूदे पाक	5		
बख़्शिश व मग़्फ़िरत	6	चौदह हज़ार दुरूदे पाक का सवाब	12
माल में ख़ैरो ब-र-कत	7		
क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा मज़्बूत़ हो	7	दुरूदे **तुनज्जीना**	13
दीन व दुन्या की ने'मतें ह़ासिल कीजिये	8	फ़ेहरिस्त	14
		मआख़िज़ो मराजेअ़	15

www.dawateislami.net

ماٰخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعہ
تفسیر روح البیان	الامام والشیخ اسماعیل حقی البروسوی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ
صحیح البخاري	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ، ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن الحجاج بن مسلم القشیری ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
مجمع الزوائد	حافظ نورالدین علی بن ابی بکر ۸۰۷ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی ۶۰۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
الشفاء	ابوالفضل قاضی عیاض مالکی ۵۴۴ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
افضل الصلوات	الشیخ یوسف بن اسماعیل النبہانی ۱۳۵۰ھ	دارالثمر
مطالع المسرات	امام محمد مہدی فاسی ۱۱۰۹ھ	مکتبۃ المدینہ مرکز الاولیاء لاہور
القول البدیع	حافظ محمد بن عبدالرحمٰن السخاوی ۹۰۴ھ	مؤسسۃ الریان بیروت ۱۴۲۲ھ
الفتاوی الرضویۃ	مجددِ اعظم اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، لاہور ۱۴۱۲ھ

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते **इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
ह़ैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net